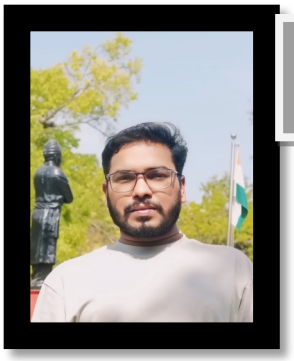

सत्य पी

गंगानगर

तो क्या हो गया

ये क्या के रुत बदलने लगी

तो बदलाव तुम पर भी उतरे

इस दिल के गुल्सिताँ से फूल झरे

तो साथ

दीवाने को भी रुखसती का हुक्म मिल गया

जो कुछ दिन परिंद नहीं लौटा

तो क्या हो गया

होना तो ये था के दरवाज़े बागीचे के खुले रहते इंतज़ार में

सबा मेहराबों के तले बिखरे बाल लिए भीगी हुई आँखें फाड़े देखती रास्ते को

मगर, अफ़सोस सिवा इसके सब हुआ

बपा हुई रौनकें बहार के साथ

विदा की अगली ही घड़ी दीवारों पर दिए जले

अंगूरों के गुच्छे अचानक मीठे हुए

मगर आशिक़ ने कैसे बिताए दिन

रब भी नहीं जानता

दिल से निकाला गया तेरे तो कहीं का रहा नहीं

सहरा से पहाड़ों से धरती से खला से छिटका गया

दो पगथली रखने की जगह भी कायनात में मिली नहीं

सो मैं लौट कर,फिर तेरे दिल में घर चाहता हूं

मैं वही के जिसने तेरे रंगत भरे पांवों को देखा तो हज़ारों खुदाओं को किनारे कर दिया

मैं वही के जिसने तेरी हथेली को चूमने की आरजू पाली,तो

ख्वाहिशें बाकी पत्थरों पे तोड़कर चकनाचूर कर दी

मैं ,मैं वही के जिसने दुनिया को तेरा बदल जाना

माथे को चूमा तो तेरा भाग अपने सिर ले लिया

सो दुनिया का समूचा दुःख मेरे कांधों पर आ गया

और तुमने भी निकाल कर दिल से मुझे

भीतर से दरवाज़ा बंद कर लिया